BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - आठ

पुरुषपरीक्षा
(व्याख्यान-)

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

Topic: दयावीर कथा (व्याख्यान-1)

यमुना नदीक ततपर योगिनीपुर नामक नगर अछि। ओतय अलाउद्दीन नामक यवन राजा भेलाह। एकदिन कोनो कारणेँ महिम नामक सेनापतिपर तमसयलाह। ओ सेनापति अपन मालिककेँ कुपित जानि, जे ई हमर प्राण लय लेताह, सोचय लागल - अर्थक रखनिहार राजाक विश्वास नहि करी। राजा, दुष्ट ओ साँप तीनू कतहु विश्वासक योग्य नहि होइछ। ओ आदर-भाव देखबितहु रहत तइयो अतर्कित रूपे प्राणघात कय देत। महिम सेनापति सोचलाह एखनहि, जाधरि हम बन्धनमे नहि पड़ल छी तखनहि, एतयसँ कतहु जाय अपन आत्मरक्षा करी। ई विचारि ओ परिवार सहित पड़ाय गेल। पड़इतहु ओ सोचलक जे परिवारकेँ संग लऽ कऽ दूर जायब सेहो संभव नहि, आ छोड़ब सेहो उचित नहि। सोचिमे पड़ि गेल सेनापति।

सेनापति एतहि सँ दयावीर हम्मीर देवक ओतय जाय रहलाह। ओ यवन हम्मीर देवक ओतय जाय दुनका कइल। महिम (सेनापति) बाजल - किन्तु अपराधेँ मारबाला प्रस्तुत मालिकक डरेँ हम अपनेक शरण आयल छी।

सेनापति बजलाह- यदि हमर रक्षा कय सकी तँ विश्वास भेल जाय, नहि तँ एतयसँ कतहु आन ठाम जाइ। राजा ओहिठा पर घोषणा आओर कहलनि - यवन। तोँ हमर शरणमे अयलाह, तँ हमरा जीवित यवनराजक कोन कथा, यमराजो तोहर किछु नहि बिगाड़ि सकतौ। तेँ निर्भय भ' रहह। तखन ओ यवनक वजीर ओतहि रणथंभौर नामक किलामे सेनापति ओहदाहिन भय रहय लागल।

यवनराज केँ कुसमाचार अयलैक जे ओ माहिम एतहि आछि! तखन ओ अत्यन्त तमतमायल, हाथी, घोड़ा सेनाक पदाघातसँ पृथ्वीकेँ कम्पित करैत भादवमासक बादलसँ दिशा-दिशाकेँ धूलित करैत, रास्ता पार करैत, किलाक फाटक पर आबि, मेघ जकाँ तीर बरसाबय लगलक। हम्मीर देव सेहो बाहिर आइबैत चारूकात घेरल-बेरल भालाक नोकसँ तीरबचोरब गुम्बजवला, यनाकाले चलनक जबर फाटक केँ एहन किलाकेँ सुसज्जित कय, छोड़ीपर चढ़ायरहलाइत तीरधनुषक प्रहारसँ गगनमंडलकेँ अन्हार भेलक आ दुइ राजाक बीच युद्धक घोषणा भऽ गेल।

Sarvajeet Kumar

Scanned by TapScanner